



Niraj



Ms.holika

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120629201

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
30/11/1997 :	जन्म तिथि	: 21/01/1998
रविवार :	दिन	: बुधवार
घंटे 20:12:00 :	जन्म समय	: 18:00:00 घंटे
घटी 34:41:41 :	जन्म समय(घटी)	: 28:23:44 घटी
India :	देश	: Nepal
Daltonganj :	स्थान	: Kathmando Zila
24:02:00 उत्तर :	अक्षांश	: 27:04:00 उत्तर
84:04:00 पूर्व :	रेखांश	: 85:03:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 86:15:00 पूर्व
घंटे 00:06:16 :	स्थानिक संस्कार	: -00:04:48 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:19:19 :	सूर्योदय	: 06:54:57
17:05:29 :	सूर्यास्त	: 17:37:24
23:49:35 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:49:43
मिथुन :	लग्न	: कर्क
बुध :	लग्न लग्नाधिपति	: चन्द्र
वृश्चिक :	राशि	: तुला
मंगल :	राशि-स्वामी	: शुक्र
ज्येष्ठा :	नक्षत्र	: स्वाति
बुध :	नक्षत्र स्वामी	: राहु
2 :	चरण	: 3
धृति :	योग	: शूल
बव :	करण	: तैतिल
या-यतीन्द्र :	जन्म नामाक्षर	: रो-रोहिणी
धनु :	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: कुम्भ
विप्र :	वर्ण	: शूद्र
कीटक :	वश्य	: मानव
मृग :	योनि	: महिष
राक्षस :	गण	: देव
आद्य :	नाड़ी	: अन्त्य
मृग :	वर्ग	: मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी
बुध 11वर्ष 8मा 11दि
शुक्र

11/08/2016

11/08/2036

शुक्र	12/12/2019
सूर्य	11/12/2020
चन्द्र	12/08/2022
मंगल	12/10/2023
राहु	12/10/2026
गुरु	12/06/2029
शनि	11/08/2032
बुध	12/06/2035
केतु	11/08/2036

अंश

28:36:26
14:36:16
20:49:34
22:27:25
06:00:35
22:39:52
28:50:24
19:56:04
22:01:06
22:01:06
11:49:54
04:06:01
11:45:34

राशि

मिथु
वृश्चि
वृश्चि
धनु
धनु
मक
धनु
मीन व
सिंह व
कुंभ व
मक
मक
वृश्चि

ग्रह

लग्न
सूर्य
चंद्र
मंगल
बुध
गुरु
शुक्र व
शनि
राहु व
केतु व
हर्ष
नेप
प्लूटो

राशि

कर्क
मक
तुला
कुंभ
धनु
कुंभ
धनु
मीन
सिंह
कुंभ
मक
मक
वृश्चि

अंश

13:06:10
07:25:17
15:01:29
03:06:28
18:01:29
02:55:05
29:17:13
20:52:16
17:30:10
17:30:10
14:26:50
05:52:59
13:33:47

विंशोत्तरी

राहु 6वर्ष 8मा 18दि
शनि

10/10/2020

10/10/2039

शनि	13/10/2023
बुध	22/06/2026
केतु	01/08/2027
शुक्र	01/10/2030
सूर्य	13/09/2031
चन्द्र	13/04/2033
मंगल	23/05/2034
राहु	29/03/2037
गुरु	10/10/2039

व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

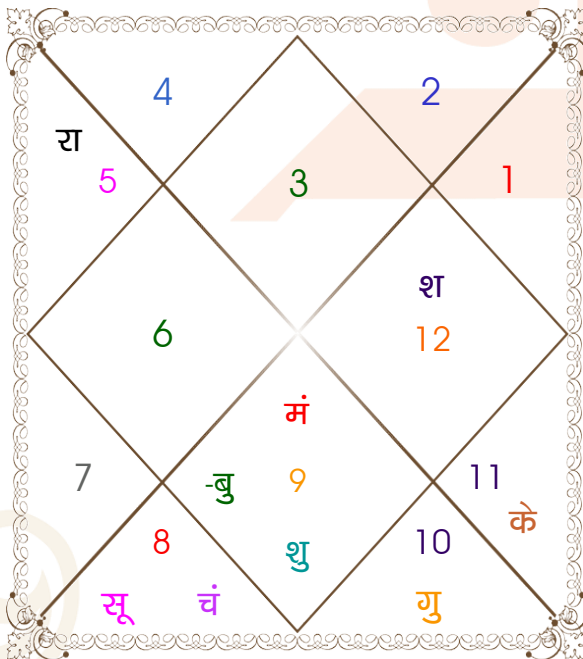
राहु : स्पष्ट

23:49:35

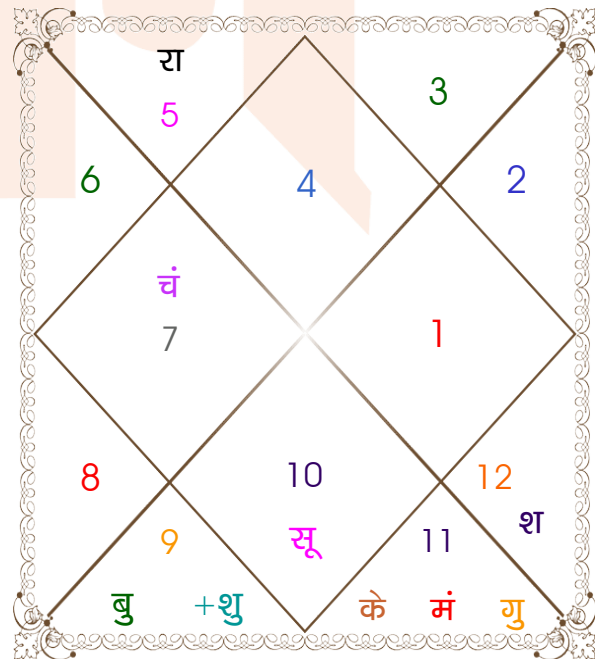
चित्रपक्षीय अयनांश

23:49:43

लग्न-चलित



लग्न-चलित



MAA MATANGI FALIT JYOTISH KENDRA

Gayatri nagar near G L A college daltonganj

Palamu jharkhand (822102)

Call-6201143328 what's-7061110945

pt.ravirajanprabhu108@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

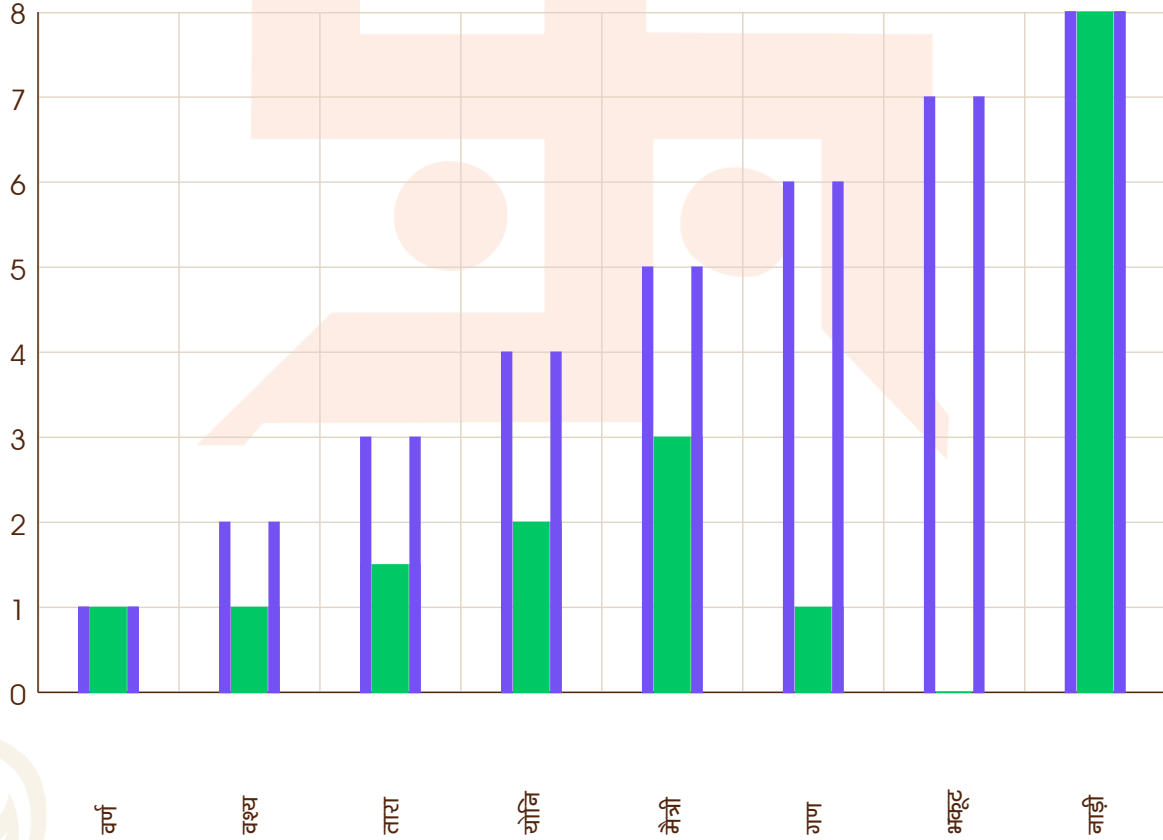
कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	महिष	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शुक्र	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान

कुल :

36

17.50

कुल : 17.5 / 36



अष्टकूट मिलान

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।
छपतर का वर्ग मृग है तथा डेणिवसपां का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार छपतर और डेणिवसपां का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

छपतर मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम भाव में स्थित है।

डेणिवसपां मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में स्थित है।

**अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते ।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते ।।**

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेणिवसपां कि कुण्डली में अष्टम भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा ।
न मंगली मंगल राहु योग ।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु डेणिवसपां कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**त्रिषट् एकादशे राहु त्रिषट् एकादशे शनिः ।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत् ।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु छपतर कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

छपतर तथा डेणिवसपां में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।



अष्टकूट फलादेश

वर्ण

छपतंर का वर्ण ब्राह्मण तथा डेणीवसपां का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। डेणीवसपां सभी को मान एवं प्रतिष्ठा देती है तथा सेवा करती रहेंगी। साथ ही वह सबकी अपेक्षाओं को पूरा करती रहेंगी तथा किसी के भी साथ तर्क-वितर्क नहीं करेंगी। डेणीवसपां एक नर्स की भाँति अपने पति एवं बच्चों की सेवा एवं तिमारदारी करती रहेंगी।

वश्य

छपतंर का वश्य कीट है एवं डेणीवसपां का वश्य द्विपद है। जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। कीट छपतंर एवं मनुष्य डेणीवसपां के विवाह को स्वीकार्य है किंतु दोनों के बीच हितों का संघर्ष होता रहेगा एवं सहयोग एवं आपसी समझ की कमी बनी रहेगी। कभी कभी परस्पर शत्रुता की भावना भी विकसित हो सकती है। जो इनके दांपत्य जीवन को बाधित कर सकता है तथा विकास एवं समृद्धि को प्रभावित कर सकता है। छपतंर एवं डेणीवसपां बीच अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे तथा कटुता, संदेह एवं तनाव का माहौल बना रह सकता है।

तारा

छपतंर की तारा क्षेम तथा डेणीवसपां की तारा वध है। डेणीवसपां की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह छपतंर एवं डेणीवसपां दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। डेणीवसपां अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

छपतंर की योनि मृग है तथा डेणीवसपां की योनि महिष है। अर्थात् दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात् सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता

है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात् मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात् धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में छपतंर एवं डेणिवसपां दोनों के राशि स्वामी परस्पर सम हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से औसत मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान औसत माना जायेगा। इसके कारण जीवन एवं करियर में हमेशा उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों के बीच प्रेम एवं सहयोग का माहौल रहेगा किंतु यदा-कदा आपस में ये लड़ाई-झगड़ा भी कर सकते हैं। हालांकि ये जल्दी ही अपने झगड़े को भुलाकर समझौता भी कर लेंगे तथा जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहेंगे। सफलता पाने के लिए इनको अथक परिश्रम एवं उद्यम करना पड़ सकता है।

गण

छपतंर का गण राक्षस तथा डेणिवसपां का गण देव है। अर्थात् डेणिवसपां का गण छपतंर के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण छपतंर निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही छपतंर का डेणिवसपां के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। डेणिवसपां हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

छपतंर से डेणिवसपां की राशि द्वादश भाव में स्थित है डेणिवसपां से छपतंर की राशि द्वितीय भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके फलस्वरूप दोनों के बीच कलह, लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं परिवार में कुछ अनहोनी घटनाएं आदि हो सकती हैं। इस मिलान में छपतंर परिश्रमी, परिवार से प्रेम करने वाला, अच्छा कमाने वाला तथा बचत करने वाला होगा किंतु डेणिवसपां का स्वभाव इसके ठीक विपरीत होगा। डेणिवसपां की शारीरिक स्थिति कमजोर तथा स्वास्थ्य अक्सर खराब रह सकता है। साथ ही डेणिवसपां तुरंत क्रोधित होने वाली तथा अपव्ययी होंगी। वह अपने पति द्वारा कमाए गए पैसों को अपने फालतू शौकों एवं दिखावे में व्यय करने वाली होंगी। परिणामतः दोनों के बीच अक्सर

लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे।

नाड़ी

छपतर की नाड़ी आद्य है तथा डेणिवसपां की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात् दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात् यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान में शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ का संतुलन होता है। छपतर की आद्य नाड़ी तथा डेणिवसपां की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, दम्पत्ति के आपसी प्रेम एवं समझदारी की द्योतक हैं। जिसके कारण आपकी संतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।



मेलापक फलित

स्वभाव

छपतंर की जन्म राशि जलतत्व युक्त वृश्चिक तथा डेणीवसपां की वायुतत्व युक्त तुला राशि है। वायु एवं जल में नैसर्गिक विषमता होने के कारण छपतंर और डेणीवसपां के मध्य स्वाभाविक असमानताएं विद्यमान होंगी जिससे परस्पर संबंधों में तनाव रहेगा तथा वैवाहिक जीवन में परेशानी की अनुभूति करेंगे। अतः यह मिलान उत्तम नहीं रहेगा।

छपतंर की राशि का स्वामी मंगल तथा डेणीवसपां की राशि का स्वामी शुक परस्पर सम राशि में स्थित है। इसके प्रभाव से छपतंर और डेणीवसपां दोनों का परस्पर उदासीन भाव रहेगा इससे दोनों के संबंध सामान्य रहेंगे तथा न इनमें अधिक कटुता रहेगी तथा न ही कोई विशेष मधुरता। तथापि परस्पर सामंजस्य की प्रवृत्ति से आपस में सदभाव तथा सहानुभूति बनी रहेगी एवं एक दूसरे को सुख दुख में सहयोग प्रदान करते रहेंगे फलतः वैवाहिक जीवन में सुख शांति बनी रहेगी।

छपतंर एवं डेणीवसपां की राशियां परस्पर द्वादश एवं द्वितीय भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से इनके मध्य शारीरिक मानसिक तथा अन्य विषमताएं विद्यमान होंगी जिससे संबंधों में तनाव रहेगा। वे एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे जिससे परस्पर वैमनस्य तथा विरोध के भाव में वृद्धि होगी तथा एक दूसरे को श्रेष्ठ समझने की प्रवृत्ति से आलोचनात्मक दृष्टि कोण भी रहेगा। फलतः वैवाहिक जीवन में अशांति तथा कटुता बनी रहेगी।

छपतंर का वश्य कीट तथा डेणीवसपां का वश्य मानव है। मानव एवं कीट में नैसर्गिक शत्रुता होने के कारण इनकी अभिरुचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं में भी विषमता रहेगी। अतः दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

छपतंर का वर्ण ब्राह्मण तथा डेणीवसपां का वर्ण शूद्र है। अतः इनकी कार्य क्षमता भी अलग अलग होगी। छपतंर शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्य कलापों में रुचिशील होंगे लेकिन डेणीवसपां की प्रवृत्ति किसी भी कार्य को बिना किसी चुनाव के परिश्रम पूर्वक करने की रहेगी।

धन

छपतंर और डेणीवसपां दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। छपतंर और डेणीवसपां दोनों की राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती है। अतः यह भकूट दोष माना जाएगा जिससे धनार्जन में परिश्रम की बहुलता रहेगी लेकिन मंगल के शुभ प्रभाव से उचित धन प्राप्त करके आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता बनी रहेगी।

भकूट दोष के प्रभाव से छपतंर की प्रवृत्ति व्ययशील होगी। वह जुआ सट्टा लाटरी

आदि पर भी वे अधिक व्यय करेंगे जिससे यदा कदा अर्थिक विषमता की अनुभूति हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अधिक समय तक नहीं रहेगा। सामान्यतया स्थिति अनुकूल ही रहेगी तथापि छपतंर को ऐसी प्रवृत्तियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

छपतंर आद्य तथा डेणीवसपां अन्त्य नाड़ी में उत्पन्न हुई हैं। अतः अलग अलग नाड़ी होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे परन्तु मंगल के प्रभाव से दोनों को समय समय पर शारीरिक कष्ट की प्राप्ति होती रहेगी। इससे दोनों गुप्त रोग या धातु संबंधी रोगों से परेशान रहेंगे तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट भी हो सकता है। छपतंर की रतिक्रिया में शिथिलता रहेगी जबकि डेणीवसपां की संभोग के प्रति उनके मन में उदासीनता का भाव रहेगा फलतः दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं होगा। अतः इस प्रभाव की न्यूनता के लिए छपतंर और डेणीवसपां को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से छपतंर और डेणीवसपां का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त छपतंर और डेणीवसपां के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में डेणीवसपां के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन डेणीवसपां को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में डेणीवसपां को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से छपतंर और डेणीवसपां सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार छपतंर और डेणीवसपां का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

डेणीवसपां के अपनी सास से सामान्यतया अच्छे संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा उनके मध्य अनावश्यक मतभेद तथा तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु परस्पर सामंजस्य के द्वारा उनका समाधान हो जाएगा तथा इससे विशेष कठिनाई नहीं होगी। साथ ही डेणीवसपां सास से अपनी

माता के समान व्यवहार करेंगी तथा इसी प्रकार उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का ध्यान रखेंगी।

लेकिन ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में डेणीवसपां को काफी परेशानी तथा असुविधा का सामना करना पड़ेगा। यदि डेणीवसपां धैर्य, गंभीरता तथा सामंजस्य का उनके प्रति प्रदर्शन करेंगी तो उनसे किंचित मात्रा में सहानुभूति प्राप्त हो सकती है। देवर एवं ननदों से डेणीवसपां के संबंधों में मधुरता का अभाव रहेगा तथा परस्पर ईर्ष्या तथा प्रतिद्वन्द्विता का भाव रहेगा। इस प्रकार सामंजस्य एवं बुद्धिमता से ही डेणीवसपां ससुराल में अनुकूल वातावरण प्राप्त कर सकती है।

ससुराल-श्री

छपतंर की सास से संबंधों में मधुरता बनी रहेगी तथा आपसी सामंजस्य के कारण एक दूसरे के प्रति स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा तथापि यदा कदा संबंधों में औपचारिकता के भाव का भी समावेश रहेगा। उनके मध्य मतभेदों की न्यूनता रहेगी। अतः समय समय पर छपतंर सपत्नीक ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन छपतंर ससुर के साथ मधुर संबंधों में नित्य वृद्धि करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य एवं बुद्धिमता से इनके मध्य अपनत्व का भाव बना रहेगा तथा समय समय पर उनसे इन्हें उपयोगी सलाह भी मिलती रहेगी। इसके अतिरिक्त साले एवं सालियों से भी मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। इस प्रकार ससुराल के लोगों का छपतंर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रहेगा तथा सास को छोड़कर अन्य लोगों से अनौपचारिक संबंध रहेंगे। फलतः वे इनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा अपना वांछित सहयोग समय समय पर प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।